बेहतर पशुधन प्रबन्धन की ओर ...

सेन्टर फॉर कम्यूनिटी इकोनोमिक्स एण्ड डेवलपमेंट
कन्सलटैंट्स सोसायटी (सिकोईडिकोन)

एफ-159-160, औद्योगिक एवं संस्थानिक क्षेत्र, सीतापुरा, जयपुर-302022 (राज.)
फोन : 91-141-2771488/2770812/3294834 फैक्स : 91-141-2770330

प्रिय पशुपालकों,

सिकोईडिकोन संस्था विगत 35 वर्षों से अपने साथी समुदाय की आजीविका संवर्धन हेतु अनवरत कार्य कर रही है। उसी कार्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पशुधन की उचित देखभाल व बेहतर प्रबंधन हेतु लोगों को ज़ागरूक करना व उनका क्षमतावर्धन करना है। संस्था ने विगत वर्षो में इस विषय में अनेक कार्य किये हैं। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए संस्था बेहतर पशुधन प्रबंधन पर एक मार्गदर्शिका का प्रकाशन कर रही हैं। यह मार्गदर्शिका पशुधन प्रबंधन पर सामान्य व उपयोगी जानकारियों का एक संकलन है। यह जानकारियॉ विभिन्न पशु चिकित्सकों एवं पशुपालन विशेषज्ञों से हुई चर्चा के आधार पर एकत्र की गई हैं व उनको संकलित कर एक मार्गदर्शिका का रूप दिया गया हैं।

संस्था सभी पाठकों व उपयोगकर्ताओं से निवेदन करती हैं कि इन जानकारियों का प्रयोग पशुधन की दैनिक देखभाल व प्रबंधन हेतु तो करे ही साथ ही समय–समय पर पशु चिकित्सक व पशुपालन विशेषज्ञ से भी सलाह लेते रहें।

इस मार्गदर्शिका के अंत में पशुधन प्रबंधन हेतु दैनिक डायरी का प्रारूप दिया जा रहा है। कृपया दैनिक डायरी का नियमित उपयोग करें व अपने पशुधन का बेहतर प्रबंधन करते हुए अपनी आजीविका संवर्धन हेतु कदम बढ़ाएं।

इसी शुभेच्छा के साथ।

प्रस्तावना

राजस्थान के टोंक जिले की मालपुरा पंचायत समिति के लोगों की आजीविका मुख्य स्त्रोत कृषि व पशुपालन है। कृषि मुख्यतः वर्षा आधारित हैं। पूर्व में इस क्षेत्र के लोग इन्हीं दो स्त्रोतों पर निर्भर रहते हुए अपना जीवन यापन अच्छे से कर लेते थे। किंतु आज परिस्थितियों में बदलाव हुआ है।

कृषि में रसायनों का अंधाधुंध प्रयोग, जल का अत्यधिक दोहन आदि से मिट्टी की गुणवत्ता कमज़ोर हुई हैं एवं कृषि उत्पादन भी कम हुआ हैं। आज कृषक केवल कृषि व पशुपालन पर निर्भर रहकर अपना परिवार नहीं चला पा रहे हैं और आजीविका अर्जन हेतु पलायन, मज़दूरी आदि पर निर्भर हो रहे हैं। अधिकतर युवा वर्ग कृषि से विमुख होकर शहरों की ओर पलायन कर रहा है।

आज आवश्यकता यह है कि कृषि व पशुपालन को पुनः लाभ अर्जित करने वाला व्यवसाय बनाया जाए। इसके लिए संस्था ने इस क्षेत्र के लाम्बा हरिसिंह व मोरला ग्राम पंचायत के 5 गॉवों में प्रायोगिक तौर पर एक परियोजना का संचालन किया, जिसका मुख्य उद्देश्य लघु व सीमांत कृषक और मज़दूरी करने वाले परिवारों की आजीविका को सुनिश्चित करने हेतु पशुधन आधारित जैविक कृषि को बढ़ावा देना व कृषि व पशुपालन को लाभकारी व्यवसाय बनाना है।

इस हेतु क्षेत्र में पाई जाने वाली गिर गाय के उचित प्रबंधन हेतु विशेष रूप से कार्य किया गया है। इसी के साथ पशुधन क्रय हेतु लोन, दुग्ध उत्पादन व सब्जी उत्पादन हेतु विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन व जैविक कृषि संवर्धन हेतु प्रदर्शन फील्ड़ आदि गतिविधियॉ सम्पादित की जा रही हैं।

पशुधन प्रबन्धन

अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए पशु प्रबन्धन का अपना बहुत महत्व है। अच्छी खुराक, अच्छी नस्ल तथा समुचित चिकित्सा या टीकाकरण के बाद भी यदि प्रबन्धन अच्छा नहीं है तो पूरा दूध उत्पादन नहीं मिल सकता है। गाय उसकी क्षमता का पूरा दूध तब ही देती है जब उसे उचित एवं आरामदायक परिस्थिति मिलेगी।

पशु की दिनचर्या में गड़बड़, आवास की अनुचित व्यवस्था या किसी भी कारण से पशु में उत्पन्न हुई बेचैनी, घबराहट, डर या चमक का सीधा प्रभाव दूध उत्पादन पर पड़ता है। इसलिऐ पशु प्रबन्धन के लिऐ निम्न बातें आवश्यक है :–

1. गाय को बांधने का स्थान स्वच्छ, सूखा एवं समतल होना चाहिये।
2. पशुशाला में पर्याप्त हवा व प्रकाश आना चाहिये।
3. दाना–बांट, घास खिलाने का बर्तन या नांद साफ–सुथरी रखे, उसकी रोज़ सफाई करें।
4. पशु शाला से गोबर व कचरा तुरंत हटाया जाना चाहिये। प्रतिदिन सुबह व शाम अच्छे से सफाई करते रहे।
5. पशुओं को एक पंक्ति में बांधे यदि दो पंक्ति बनाना है तो प्रयास ये करें कि उनके मुँह एकदम आमने–सामने नज़दीक न हो।
6. पानी की नांद (खेली) साफ–सुथरी होना चाहिये। उसे हर सप्ताह जरूर धोवें तथा उसमें चूना डालते रहे। ताकि पानी स्वच्छ रहे तथा पशु को पानी के साथ कैल्सिमय की पूर्ति भी होती रहे।
7. पशुओं को घास, चारा व बांट देने का समय निर्धारित रखे। उसे बार–बार बदले नहीं। यदि आप दूध दुहने से पहले बांट देते हैं, तो हमेशा पहले ही देवे। यदि बाद में देते है तो हमेशा बाद में ही देवे। दोपहर और रात में देते हैं तो हमेशा वैसा ही करें। समय को बार–बार बदलने से दूध उत्पादन में घट–बढ़ होती ही रहेगी।
8. पशुओं को छोड़ने व घूमने या चरने पर जाने का समय भी एक ही होना चाहिये।

9. जहॉ तक सम्भव हो बांट, घास व चारा डालने, दूध दुहने या चराने ले जाने वाले व्यक्ति को भी बार–बार न बदले। जो व्यक्ति ये काम कर रहा है, हमेशा वही करें तो दूध उत्पादन नियमित एवं एक जैसा ही मिलेगा।

10. सप्ताह में एक बार पशुओं को नहलाना चाहिये। यदि ये सम्भव न हो तो किसी रस्सी का मूंजा बनाकर पशु के पूरे शरीर को रगड़ना चाहिये, इसे ग्रुमिंग कहते हैं।

11. ग्रुमिंग से पशुओं के शरीर का तापमान सामान्य रहता है। उन्हें जू या चिंचड़ा भी नहीं होता। यदि दिखे तो तुरंत पशु चिकित्सक की सलाह लेवे तथा दवाई लाकर लगावे।

12. पशु को शोर–शराबे से दूर होना चाहिय। शोर–शराबे से पशु भड़कते है, जिसका सीधा प्रभाव दूध उत्पादन पर पड़ता है। मधुर संगीत का दूध उत्पादन पर अच्छा प्रभाव डालता है।

13. पशु शाला में गंदगी व मच्छर नहीं होने दें। समय–समय पर फिनाइल का छिड़काव करते रहें ताकि बीमारी के किटाणु न पैदा हो सके।

14. ठंड के दिनों में पशुओं पर विशेष ध्यान रखे। ज्यादा ठंड हो तो उनकी पीठ पर थैले आदि बांधे।

15. ठंड में पशुओं की भूख तुलनात्मक बढ़ जाती है, इसे भले ही सूखा चारा खिलावे परन्तु उन्हें भूखा नहीं रहने देवे। भैंसों में आषाढ़ी (उठान) ठंड की भूख के कारण ही आता है।

16. पशु की दिनचर्या में, व्यवहार में या स्वास्थ्य में जरा भी परिवर्तन दिखे, उसे चिकित्सक को तुरंत दिखावे।

17. पशु खाना–पीना कम कर दे, जुगाली नहीं करें, उदास दिखे, नाक पर सूखापन आ जावे, आंख व मुंह से पानी गिरे, गोबर पतला, खून या आंव के साथ आवे या अपने बच्चे को पास नहीं आने देवे तो समझ लीजिए वह बीमार है, उसे तुरंत चिकित्सक को दिखावे।

18. छूत की बिमारियों से बचाने के लिए नियमित व समय पर टीकाकरण करावे।

19. बीमार पशुओं को तुरंत पशु शाला से हटाकर, अलग जगह बांधे ताकि अन्य पशु प्रभावित न हो सके।

20. बीमार पशुओं को बांट, चारा, पानी सभी अलग देवे।

21. ग्याबिन पशु पर विशेष ध्यान देवे, सम्भव हो तो अलग बांधे।

22. स्वस्थ पशु गर्मी पर नियमित आते है। गाय हर 21 दिन व भैंस 23 दिन में गर्मी पर आती है। ध्यान रखे तथा बच्चा देने के 2–3 माह में उसे गर्भीत करावे। यानि हर साल पशु बच्चा देवे।

23. प्रत्येक पशु के लिए एक दैनिक डायरी बनाना चाहिए, जिसमें उसके खान–पान, स्वास्थ्य, दूध उत्पादन एवं व्यवहार में आये परिवर्तनों का संधारण प्रतिदिन करना चाहिये, ताकि उक्त किसी भी प्रकार के परिवर्तन की स्थिति में तुरन्त पशु चिकित्सक/विशेषज्ञ से सलाह ली जाकर उपचार किया जा सके। डायरी का नियमित संधारण करने से पशुधन की उचित देखभाल व अधिक समय तक दूध उत्पादन में मदद मिलती है। दैनिक डायरी का प्रारूप आगे संलग्न है।

पशुओं में संक्रामक रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण

	रोग का नाम	टीकाकरण का उपयुक्त समय
गाय व भैंस	गलघोंटू (एच.एस.)	★ मानसून पूर्व (मई –जून)
	खुरपका–मुँहपका (एफ.एम.डी.)	★ अक्टूबर से दिसम्बर एवं मार्च–अप्रैल
	लंगड़ा बुखार (बी.क्यू.)	★ मानसून पूर्व
	तिल्ली बुखार (एनथ्रेक्स)	★ फरवरी से अप्रैल (केवल प्रभावित क्षेत्रों में)

वैज्ञानिक तथ्य मासिक पत्रिका ''दाना-पानी'' के फरवरी, 2015 के अंक से जुटाई गई

वार्षिक चारा फसल चक्र

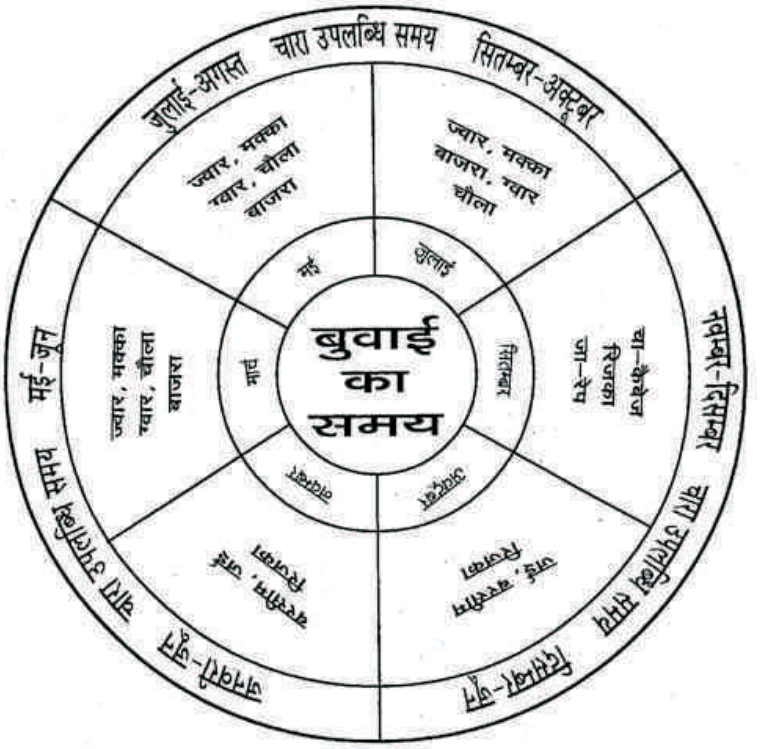

लाभ :

1. स्वस्थ गाय
2. अधिक दिन दूध
3. अधिक दूध
4. जल्दी गर्भधारण
5. हर वर्ष बच्चा।
6. सूखे की अवधि (बाखड़ी) कम।

बाजार में उपलब्ध ब्राण्डेड पशुआहार का उपयोग भी किया जाता है, लेकिन उसमें भी खनिज़ मिश्रण अवश्य मिलाना चाहिये।

सन्तुलित पशु आहार - सर्वोपरि कर्त्तव्य

जिस प्रकार स्वस्थ मानव शरीर के लिए भोजन में भाँति-भाँति की चीजें जरूरी हैं उसी प्रकार स्वस्थ पशु के आहार में भी विभिन्न अवयव आश्यक होते हैं।

पशु आहार के मुख्य अवयव -

सूखा चारा - गेहूँ तूड़ी, जौ का भूसा, ज्वार, बाजरा एवं मक्का की कुट्टी।

हरा चारा - रिजका, बरसीन, ज्वार, बाजरा, जई इत्यादि।

अनाज दाना - मक्का, जौ, ज्वार, बाजरा इत्यादि।

खल - मूँगफली, तिल, सरसों कपास इत्यादि की खल।

चोकर, पापड़, चूरी - गेहूँ चोकर, चावल चोकर।

खनिज मिश्रण व नमक।

दुधारू पशुओं का आहार कैसा हो -

विभिन्न अवस्था	दाना मिश्रण क्रिग्रा/दिन	चारा किग्रा/दिन	
		सूखा	हरा
नवजात	खीस लगभग 500 ग्राम		
परिपक्व पाडी/बछड़ी	2.5	4–6	25–30
ग्याभिन	2.5 + 1 किग्रा. (अन्तिम 2 माह)	4–6	25–30
दुधारू पशु संकर गाय/भैंस	2.5 + 1 किग्रा./ 2 किग्रा दूध	4–6	25–30
बाखड़ी (शुष्क)	2.5	4–6	25–30

पशुओं को क्या दें और क्या ना दें ?

★	केवल सूखा चारा	–	×
★	केवल हरा चारा	–	×
★	केवल खल	–	×
★	केवल बिलौना, चापड़	–	×
★	बिना दाने का आहार	–	×
★	केवल खल चूरी खिलाना पर्याप्त है	–	×
★	अनाज+खल+चापड़ / चूरी (लगभग समान भाग)	–	✓
★	खनिज लवण + नमक प्रतिदिन खिलाना	–	✓
★	सूखा चारा + हरा चारा (3 भाग + 1 भाग)	–	✓

दैनिक पशुधन डायरी

दुग्ध-उत्पादन एवं खान-पान व स्वास्थ्य संबंधी जानकारी

माह : .....वर्ष..... गाय का नाम 1.....

तारीख	सुबह	शाम	खान–पान, स्वास्थ्य एवं टीकाकरण की जानकारी

दैनिक डायरी के नियमित संधारण से पशु में आये बदलाव व समस्याओं के दौरान डायरी में लिखे पूर्व अनुभवों का अनुसरण करने से तुरन्त समाधान में मदद मिलेगी। अतः इसका नियमित प्रयोग एवं साथ ही संभालकर रखें।

दैनिक पशुधन डायरी

दुग्ध-उत्पादन एवं खान-पान व स्वास्थ्य संबंधी जानकारी

माह : .....वर्ष..... गाय का नाम 1.....

तारीख	सुबह	शाम	खान–पान, स्वास्थ्य एवं टीकाकरण की जानकारी

दैनिक डायरी के नियमित संधारण से पशु में आये बदलाव व समस्याओं के दौरान डायरी में लिखे पूर्व अनुभवों का अनुसरण करने से तुरन्त समाधान में मदद मिलेगी। अतः इसका नियमित प्रयोग एवं साथ ही संभालकर रखें।

दैनिक पशुधन डायरी

दुग्ध-उत्पादन एवं खान-पान व स्वास्थ्य संबंधी जानकारी

माह : .....वर्ष..... गाय का नाम 1.....

तारीख	सुबह	शाम	खान–पान, स्वास्थ्य एवं टीकाकरण की जानकारी

दैनिक डायरी के नियमित संधारण से पशु में आये बदलाव व समस्याओं के दौरान डायरी में लिखे पूर्व अनुभवों का अनुसरण करने से तुरन्त समाधान में मदद मिलेगी। अतः इसका नियमित प्रयोग एवं साथ ही संभालकर रखें।

गिर गाय के बारें में–

मूलतः गुजरात के गिर वन क्षेत्र की प्रजात 'गिर' गाय भारत ही नहीं बल्कि विष्व स्तर पर अपनी दुग्ध उत्पादन क्षमता, रोग प्रतिरोधक क्षमता, दूध की पोषणीय गुणवत्ता व विभिन्न प्रकार की जलवायु के अनुकूल स्वयं को ढ़ालने के गुणों के कारण जानी जाती है। हाल ही गिर गाय की औषधीय गुणवत्ता पर हो रहे शोध कार्य में पाया गया कि इस किस्म की गाय के गौ मूत्र में स्वर्ण भी पाया जाता है, जो कि आयुर्वेदीय चिकित्सकीय पद्धति में स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। इस गिर नस्ल की गाय में ए–2 वीटा केसीन वाला दूध होता है जो पूर्णरूप से सुरक्षित एवं स्वास्थ्यवर्धक होता है।

गाय के दूध, गौमूत्र व गोबर की चिकित्सकीय व कृषि में गुणवत्ता से परिवार, समुदाय व समाज को लाभान्वित करने के लिए आवश्यक है कि गौपालन के प्रबंधन पर गंभीरतापूर्वक ध्यान दिया जाए, जिसमें उनके आहार की पोषणता, स्वच्छता, रख–रखाव आदि की सुनिश्चितता अनिवार्य है।

उपरोक्त सभी विशेषताएं हमारी देशी नस्लों खासकर गीर और रेण्डी गायों में पाई जाती है। ये गायें पाचन तंत्र की धीमी चयापचन प्रक्रिया, शरीर की चमड़ी से गर्मी तेजी से निकालने की क्षमता के कारण बेहतर कार्यक्षमता रखती है इसलिए इसके बैल भी बहुत काम के रहते हैं। लेकिन विडम्बना है कि हम अपनी देशी नस्ल के गोधन को सुधारकर दूध उत्पादन बढ़ाने की बजाय विदेशी नस्ल की गायों पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। जबकि हमारी देशी नस्ल की गायें कम खर्च में पाली जा सकती है। पशु आहार, उन्हें रखने का तरीका, बीमारी से बचाव, सभी पर खर्च कम आता है। अच्छे रख–रखाव एवं खान–पान से हमारी गायें 2500 लीटर तक दूध हर ब्यावत में देते हुए प्रतिवर्ष बच्चा भी दे सकती है। यानि साल में 10 महीने दूध देगी।